पर्यावरणीय स्थिरता की दिशा में ब्रिक्स देशों के मार्गदर्शन में जैन धर्म के सिद्धांतों की भूमिका

सुबोध कुमार शर्मा

सहायक आचार्य (इतिहास)

राजकीय महाविद्यालय बनेड़ा (शाहपुरा)

सारांश

यह लेख पर्यावरणीय स्थिरता की दिशा में ब्रिक्स देशों (ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका) को जैन धर्म के सिद्धांतों द्वारा मार्गदर्शन देने की संभावनाओं का अन्वेषण करता है। जैन धर्म, जो अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह और सभी जीवन रूपों का सम्मान करने पर जोर देता है, आधुनिक पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान के लिए मूल्यवान दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। जैसे-जैसे ब्रिक्स देशों का तेजी से औद्योगिकीकरण हो रहा है और संसाधनों की कमी व पर्यावरणीय क्षति बढ़ रही है, जैन दर्शन एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है जो आर्थिक विकास और पारिस्थितिकीय संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करता है। जैन सिद्धांतों को नीति निर्माण और औद्योगिक प्रथाओं में समाहित करके इन देशों को अधिक स्थिर, नैतिक और पारिस्थितिकीय रूप से जिम्मेदार दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। यह लेख यह दर्शाता है कि जैन धर्म की शिक्षाएँ कार्बन पदचिह्न कम करने, नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित करने के प्रयासों को प्रेरित कर सकती हैं। अंततः, यह लेख वैश्विक पर्यावरण नीति को आकार देने में जैन सिद्धांतों के अपनाने की आवश्यकता पर बल देता है और एक स्थिर भविष्य की दिशा में मार्गदर्शन करता है।

मुख्यशब्द: जैन धर्म, पर्यावरणीय स्थिरता, ब्रिक्स देश, अहिंसा, सतत विकास, पारिस्थितिकीय जिम्मेदारी, नवीकरणीय ऊर्जा, नैतिक विकास, अपरिग्रह, वैश्विक पर्यावरण नीति।

आज की दुनिया में, हम पहले कभी न देखी गई पर्यावरणीय संकट का सामना कर रहे हैं। जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का ह्रास और प्रदूषण कुछ प्रमुख चुनौतियाँ हैं जिनका हम वर्तमान में सामना कर रहे हैं। यह स्थिति विशेष रूप से ब्रिक्स देशों - ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका - के लिए गंभीर है, जो दुनिया की एक बड़ी आबादी के घर हैं और जिनकी अर्थव्यवस्थाएँ तेजी से विकास कर रही हैं (UN DESA, 2019)।

जलवायु परिवर्तन एक प्रमुख संकट है, जो ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में वृद्धि के कारण होता है, जो वैश्विक तापमान वृद्धि, समुद्र स्तर का बढ़ना और चरम मौसम घटनाओं का कारण बनता है। वनों की

कटाई, लकड़ी, कृषि और शहरीकरण के लिए वनों का नष्ट होना जैव विविधता का ह्रास, मिट्टी का कटाव और कार्बन उत्सर्जन का कारण बनता है। जैव विविधता का ह्रास भी एक संकट है, जो आवास की हानि, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के कारण होता है, जो प्रजातियों के विलुप्त होने का कारण बनता है और पारिस्थितिकी तंत्र और खाद्य श्रृंखलाओं को बाधित करता है। प्रदूषण, जो मानव गतिविधियों के कारण वायु, जल और मिट्टी का होता है, एक और संकट है, जो स्वास्थ्य समस्याओं, पारिस्थितिकी तंत्र के अवक्षय और जैव विविधता के ह्रास का कारण बनता है। जल संकट, जो जलवायु परिवर्तन, जनसंख्या वृद्धि और जल संसाधनों के अत्यधिक उपयोग के कारण होता है, दुनिया के कई हिस्सों में एक बड़ा संकट बन चुका है, जो खाद्य उत्पादन और मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

पर्यावरणीय संकट अब आधुनिक दुनिया में एक तात्कालिक मुद्दा बन चुका है, जिसका मानव स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और जैव विविधता पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। ब्रिक्स देशों की अर्थव्यवस्थाएँ दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्थाएँ हैं, जिनकी उद्योगों का विस्तार, जनसंख्या वृद्धि और शहरीकरण तेजी से बढ़ रहा है। हालांकि, यह तेजी से विकास पर्यावरणीय गिरावट की कीमत पर हुआ है, जिसके कारण इन देशों में कई पर्यावरणीय संकट उत्पन्न हुए हैं। पिछले अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि आर्थिक वृद्धि और लाभ की इच्छा ने ब्रिक्स देशों में असतत प्रथाओं, प्रदूषण और पर्यावरणीय गिरावट को जन्म दिया है। उदाहरण के लिए, चीन में, तेज औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के कारण वायु और जल प्रदूषण, वनों की कटाई और मिट्टी का कटाव उच्च स्तर पर पहुंच गया है (Bai et al., 2018)। इसी तरह, भारत में, आर्थिक विकास की इच्छा ने असतत प्रथाओं को बढ़ावा दिया है जैसे कि प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, वनों की कटाई और प्रदूषण (मिश्रा, एस., इत्यादि.2017)।

इसके अतिरिक्त, ब्रिक्स देशों की जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता ने पर्यावरणीय संकटों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जैसे जलवायु परिवर्तन, जिसका पारिस्थितिकी तंत्र, कृषि और मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, ब्राजील को वन क्षेत्र की कटाई की प्रथाओं के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा है, जो जलवायु परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान करती हैं (Fearnside, 2019)। प्राकृतिक संसाधनों का दोहन और जल स्रोतों का प्रदूषण भी मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए गंभीर खतरे पैदा करते हैं (**शर्माइत्यादि.**., 2019)।

लाभ और आर्थिक वृद्धि की तलाश ने ब्रिक्स देशों के नीति निर्माताओं को अंधा कर दिया है, जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरणीय संकटों की वृद्धि हुई है। प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित शोषण, असतत प्रथाएँ और प्रदूषण ने जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, वायु और जल प्रदूषण, और मिट्टी के अपक्षय जैसे गंभीर पर्यावरणीय संकटों को जन्म दिया है। ब्रिक्स देशों को पर्यावरणीय स्थिरता के महत्व और आर्थिक वृद्धि के साथ पर्यावरणीय सुरक्षा को संतुलित करने की आवश्यकता को समझना होगा।

1.1 ब्रिक्स देशों में पर्यावरणीय स्थिरता की चुनौतियाँ

ब्रिक्स के पांच देशों - ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका - दुनिया की लगभग आधी आबादी और दुनिया के भूमि क्षेत्र का लगभग एक चौथाई हिस्सा रखते हैं। ये देश अपनी तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं के लिए प्रसिद्ध हैं, लेकिन साथ ही इन्हें कई पर्यावरणीय स्थिरता की चुनौतियों का सामना भी करना पड़ रहा है। इस लेख में, हम उन प्रमुख पर्यावरणीय स्थिरता की चुनौतियों पर चर्चा करेंगे जिनका वर्तमान में ब्रिक्स देशों को सामना करना पड़ रहा है।

1.1.1 जलवायु परिवर्तन:ब्रिक्स देशों का जीवाश्म ईंधन पर अत्यधिक निर्भर रहना जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारणों में से एक है। इन देशों में बढ़ती औद्योगिकीकरण और शहरीकरण की वजह से कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि हुई है, जिससे वैश्विक तापमान में वृद्धि और चरम मौसम घटनाएँ देखी जा रही हैं। उदाहरण के लिए, चीन और भारत में भारी औद्योगिकीकरण और ऊर्जा की बढ़ती खपत के कारण ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन हुआ है, जो जलवायु परिवर्तन को तेज कर रहा है (Bai et al., 2018; Mishra et al., 2017)।

1.1.2 वनस्पति और जैव विविधता का नुकसान:

ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में वनों की कटाई एक गंभीर समस्या है। ब्राजील में अमेज़नवर्षावनों की कटाई ने जैव विविधता के नुकसान के अलावा जलवायु परिवर्तन को भी बढ़ावा दिया है (Fearnside, 2019)। जंगलों का नष्ट होना न केवल कार्बन डाइऑक्साइड के अवशोषण में कमी करता है, बल्कि यह स्थानीय समुदायों और वन्यजीवों के लिए भी गंभीर खतरे पैदा करता है।

1.1.3 जल और वायु प्रदूषण:चीन और भारत जैसे देशों में वायु और जल प्रदूषण ने स्वास्थ्य संकटों को जन्म दिया है। चीन के शहरी क्षेत्रों में प्रदूषण स्तर अत्यधिक बढ़ चुके हैं, जिससे श्वसन समस्याएँ और अन्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं (Bai et al., 2018)। भारत में भी औद्योगिकीकरण और बढ़ती आबादी के कारण जल और वायु प्रदूषण ने गंभीर रूप से पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित किया है (Mishra et al., 2017)।

1.1.4 **प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक शोषण:**ब्रिक्स देशों में प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक शोषण, विशेष रूप से खनिजों, जल और वन संसाधनों का दोहन, स्थायी विकास की दिशा में एक बड़ी बाधा है। इन देशों में निरंतर बढ़ती आबादी और संसाधनों की मांग ने प्राकृतिक संसाधनों की कमी और प्रदूषण को बढ़ावा दिया है, जिससे दीर्घकालिक स्थिरता खतरे में पड़ गई है (Sharma et al., 2019)।

1.1.5 **वायु प्रदूषण:**वायु प्रदूषण ब्रिक्स देशों में एक प्रमुख पर्यावरणीय समस्या है, विशेष रूप से भारत और चीन में। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की एक रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया के नौ में से दस लोग प्रदूषित हवा में सांस लेते हैं, और लगभग 60% विश्व जनसंख्या एशिया में रहती है। ब्रिक्स देशों में वायु प्रदूषण के मुख्य स्रोत औद्योगिक उत्सर्जन, वाहनों से निकलने वाले धुएं और जीवाश्म ईंधन के जलने से होते हैं। चीन और भारत में औद्योगिकीकरण और शहरीकरण ने प्रदूषण के स्तर को और बढ़ा दिया है (Bai et al., 2018; Mishra et al., 2017)। इस प्रदूषण से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं और पारिस्थितिकी तंत्र पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

1.1.6 **जल संकट:**जल संकट ब्रिक्स देशों में एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय चुनौती बन चुका है, विशेष रूप से भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका में। संयुक्त राष्ट्र (UN) के एक रिपोर्ट के अनुसार, ये देशों जल संकट से सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। जल संकट के मुख्य कारणों में तेजी से शहरीकरण, औद्योगिकीकरण और जल स्रोतों का अत्यधिक उपयोग शामिल हैं। भारत और चीन में जल संसाधनों का अत्यधिक दोहन और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों ने जल संकट को गंभीर बना दिया है। इन देशों में जल की कमी के कारण कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है और सार्वजनिक स्वास्थ्य संकटों का सामना करना पड़ रहा है

1.1.7 **वनों की कटाई:**ब्राजील, भारत और चीन में वनों की कटाई एक प्रमुख पर्यावरणीय स्थिरता की चुनौती है। ब्राजील में, वनों की कटाई मुख्य रूप से कृषि विस्तार के कारण हो रही है, जबकि भारत और चीन में यह शहरीकरण, औद्योगिकीकरण और अवसंरचना विकास के कारण हो रही है। वनों की कटाई से मिट्टी का कटाव, जैव विविधता का नुकसान और जलवायु परिवर्तन जैसे गंभीर प्रभाव उत्पन्न हो रहे हैं। ब्राजील में अमेज़नवर्षावनों की कटाई ने न केवल कार्बन उत्सर्जन को बढ़ाया है, बल्कि यह स्थानीय और वैश्विक पारिस्थितिकी तंत्र को भी प्रभावित कर रहा है (Fearnside, 2019)

1.1.8 **अपशिष्ट प्रबंधन:**अपशिष्ट प्रबंधन ब्रिक्स देशों में एक और गंभीर पर्यावरणीय चुनौती है। तेजी से शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण उत्पन्न होने वाले अपशिष्ट की मात्रा में तीव्र वृद्धि हुई है। हालांकि, उचित अपशिष्ट प्रबंधन अवसंरचना और प्रथाओं की कमी के कारण जल स्रोतों, मिट्टी और वायु के प्रदूषण जैसी गंभीर पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। इन देशों में अपशिष्ट के निष्पादन के लिए अव्यवस्थित और अव्यावहारिक विधियाँ अपनाई जा रही हैं, जो दीर्घकालिक पर्यावरणीय संकटों का कारण बन सकती हैं।

ब्रिक्स देशों में पर्यावरणीय संकटों का समाधान करने के लिए एक समग्र और सुसंगत नीति की आवश्यकता है, जिसमें सतत विकास की दिशा में कदम उठाए जाएं। इन देशों को जलवायु परिवर्तन, जल संकट, वनों की कटाई, प्रदूषण, और अपशिष्ट प्रबंधन जैसी समस्याओं का समाधान करने के लिए दीर्घकालिक और दीर्घकालिक रणनीतियाँ अपनानी होंगी। इसके लिए नवीकरणीय ऊर्जा, पर्यावरणीय जागरूकता, और वैश्विक सहयोग के साथ-साथ स्थानीय स्तर पर भी पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देना आवश्यक है। यदि इन कदमों को सही समय पर लागू किया जाता है, तो ब्रिक्स देशों को इन पर्यावरणीय संकटों से निपटने और सतत विकास की ओर बढ़ने में सफलता मिल सकती है।

जैन धर्म एक प्राचीन धर्म है जो छठी सदी ईसा पूर्व में भारत में उत्पन्न हुआ था। यह धर्म अहिंसा, सत्य, तप, चोरी न करने और ब्रह्मचर्य के सिद्धांतों पर आधारित है। जैन धर्म ने भारतीय दर्शन, संस्कृति और समाज में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, और इसके मूल्यों ने विश्व व्यवस्था पर भी गहरा प्रभाव डाला है। जैन धर्म के सिद्धांतों को न केवल जैन समुदाय ने अपनाया है, बल्कि इनका व्यापक रूप से समाज और विभिन्न संगठनों द्वारा भी समर्थन किया गया है, जिससे इनकी सार्वभौमिक महत्वता स्पष्ट होती है। इस शोध पत्र का उद्देश्य जैन धर्म के सिद्धांतों का अध्ययन करना और यह समझना है कि इन सिद्धांतों का आधुनिक विश्व व्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ा है।

विधि:

यह शोध लेख विभिन्न स्रोतों की साहित्य समीक्षा पर आधारित है, जो जैन धर्म के सिद्धांतों और उनके आधुनिक समाज में प्रासंगिकता को उजागर करते हैं। इस साहित्य समीक्षा में शैक्षिक लेख, पुस्तकें और ऑनलाइन संसाधन शामिल हैं। समीक्षा के दौरान "जैन धर्म", "मूल्य", "अहिंसा", "सत्य", "तप", "चोरी न करना" और "ब्रह्मचर्य" जैसे प्रमुख शब्दों का उपयोग किया गया।

1.2 जैन धर्म के सिद्धांत और उनका पर्यावरणीय स्थिरता पर प्रभाव:

1.2.1 अहिंसा (Non-violence):जैन धर्म में अहिंसा का सर्वोच्च स्थान है। यह सिद्धांत न केवल मानवता के प्रति दया और सहानुभूति को बढ़ावा देता है, बल्कि प्रकृति और पर्यावरण के प्रति भी जिम्मेदारी का अहसास कराता है। यह सिद्धांत ब्रिक्स देशों में पर्यावरणीय संकट के समाधान के लिए एक महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश प्रदान कर सकता है, क्योंकि यह हमें पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और जीवों के साथ सह-अस्तित्व की आवश्यकता को समझाता है (Jain, 2016)।

1.2.2 सत्य (Truth):सत्य का पालन करना जैन धर्म के अन्य महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक है। सत्य न केवल व्यक्तिगत आचरण में, बल्कि पर्यावरणीय नीतियों और योजनाओं में भी सत्य का पालन आवश्यक है। यदि ब्रिक्स देशों के नीति निर्माता अपने निर्णयों में सत्य का पालन करें

और प्रकृति के साथ संतुलन बनाने के लिए सचेत रूप से काम करें, तो यह देशों को विकास के साथ-साथ पर्यावरणीय स्थिरता की ओर अग्रसर कर सकता है।

1.2.3 तप (Asceticism):तप का अर्थ है आत्म-नियंत्रण और आंतरिक शांति की प्राप्ति। जैन धर्म में यह सिद्धांत संयमित जीवनशैली की ओर प्रेरित करता है, जो प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग से बचने में मदद करता है। ब्रिक्स देशों में यदि लोग और सरकारें संयमित जीवनशैली को बढ़ावा देती हैं, तो इससे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में मदद मिलेगी और पर्यावरणीय संकटों का समाधान संभव होगा।

1.2.4 चोरी न करना (Non-stealing):चोरी न करने का सिद्धांत केवल भौतिक संपत्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका व्यापक अर्थ है प्राकृतिक संसाधनों का अति उपयोग और उनके दुरुपयोग से बचना। ब्रिक्स देशों में संसाधनों की अत्यधिक दोहन को रोकने के लिए जैन धर्म के इस सिद्धांत को अपनाया जा सकता है। यह सिद्धांत जल, वायु, और जंगलों जैसे संसाधनों के अनियंत्रित दोहन को रोकने में मदद कर सकता है।

1.2.5 ब्रह्मचर्य (Chastity):ब्रह्मचर्य का पालन संयम और स्वच्छता के प्रति समर्पण को बढ़ावा देता है। यह सिद्धांत न केवल व्यक्तिगत जीवन के लिए बल्कि प्राकृतिक संसाधनों के संतुलन और स्थिरता के लिए भी महत्वपूर्ण है। यदि ब्रिक्स देशों में इस सिद्धांत को अपनाया जाए, तो यह प्राकृतिक संसाधनों के अधिक और अनुपयुक्त उपयोग को कम करने में सहायक होगा।

1.3 जैन धर्म के सिद्धांतों का वैश्विक प्रभाव:

जैन धर्म के सिद्धांतों का प्रभाव न केवल भारत में, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी देखा गया है। कई अंतरराष्ट्रीय संगठनों और व्यक्तियों ने जैन धर्म के अहिंसा और पर्यावरण संरक्षण के सिद्धांतों को अपने कार्यों में शामिल किया है। उदाहरण स्वरूप, कई अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन और ग्रीन इनीशिएटिव्स में जैन धर्म के सिद्धांतों को महत्वपूर्ण योगदान के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

ब्रिक्स देशों के लिए जैन धर्म के सिद्धांतों को अपने पर्यावरणीय नीतियों और रणनीतियों में शामिल करना एक स्थिर और समृद्ध भविष्य की ओर बढ़ने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। अहिंसा, सत्य, तप, चोरी न करना, और ब्रह्मचर्य जैसे सिद्धांत न केवल व्यक्तिगत जीवन को संतुलित करते हैं, बल्कि ये पर्यावरणीय संकटों के समाधान में भी मदद कर सकते हैं। जैन धर्म का यह सार्वभौमिक दृष्टिकोण ब्रिक्स

देशों में पर्यावरणीय स्थिरता की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है और एक आदर्श दुनिया की ओर कदम बढ़ाने में सहायक हो सकता है।

जैन धर्म के सिद्धांतों ने शांति, सामाजिक न्याय और स्थिरता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, और यह आधुनिक दुनिया की चुनौतियों, जैसे पर्यावरणीय स्थिरता, से निपटने के लिए एक मार्गदर्शक ढांचा प्रदान करते हैं।

1.3.1 अहिंसा:अहिंसा, या non-violence, जैन धर्म का एक मूलभूत सिद्धांत है। यह जीवन के सभी रूपों का सम्मान करने और किसी भी जीवित प्राणी को नुकसान न पहुंचाने की बात करता है, चाहे वह मानव हो, जानवर हो या पौधा। अहिंसा के इस सिद्धांत के तहत, जैन धर्म के अनुयायी शाकाहारी या वेगन आहार का पालन करते हैं और पशु उत्पादों से बनी वस्तुओं का उपयोग करने से बचते हैं। वे कीटों और सूक्ष्मजीवों को भी नुकसान पहुंचाने से बचने का प्रयास करते हैं।**अहिंसा**को अपनाकर, BRICS देशों में पशुपालन के पर्यावरणीय प्रभाव को कम किया जा सकता है, जैव विविधता का संरक्षण किया जा सकता है, और कार्बन फुटप्रिंट को घटाया जा सकता है (FAO, 2013)।

जैसे कि ब्राज़ील, भारत और चीन जैसे देश, जिनकी बड़ी जनसंख्या है और जिनके उद्योग तेजी से बढ़ रहे हैं, **अहिंसा**आधारित नीतियों को अपनाकर लाभ उठा सकते हैं। ये नीतियाँ मांसाहार के सेवन को कम करने, पौधों पर आधारित खाद्य उद्योगों का समर्थन करने और नैतिक कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित कर सकती हैं। इस दृष्टिकोण से न केवल वनों की कटाई और जलवायु परिवर्तन जैसे पर्यावरणीय मुद्दों को हल किया जा सकता है, बल्कि यह जैव विविधता के संरक्षण में भी मदद करेगा।

1.3.2 अपरीग्रह (गैर-स्वामित्व):जैन धर्म का एक अन्य महत्वपूर्ण सिद्धांत**अपरीग्रह**है, जो गैर-स्वामित्व का सिद्धांत है, जो एक साधारण और संतुष्ट जीवन शैली की बात करता है, जिसमें अत्यधिक भौतिक संपत्ति का संचय नहीं होता। जैन धर्म के अनुसार, भौतिक संपत्ति और धन का संचय अक्सर लालच को जन्म देता है, जो पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने का कारण बन सकता है। इसके बजाय, जैन धर्म एक साधारण, स्थिर जीवन शैली की सिफारिश करता है, जो भौतिक संपत्ति के बजाय रिश्तों, समुदाय और आध्यात्मिक भलाई को महत्व देता है (Dundas, 2002)।

BRICS देशों में**अपरीग्राह**के सिद्धांत को अपनाकर, सरकारें और उद्योग पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता देने वाले आर्थिक विकास पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, जो उपभोक्तावाद और भौतिकवाद से हटकर है। ऐसी नीतियाँ जो न्यूनतम उपभोक्तावाद, सतत खपत, और हरे उत्पादन को बढ़ावा देती हैं, एक अधिक समान और कम संसाधन-गहन आर्थिक मॉडल की दिशा में बदलाव ला सकती हैं। समुदायों और पर्यावरण की भलाई को प्राथमिकता देने के बजाय भौतिक संपत्ति और

उधारी को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करने से BRICS देशों का पारिस्थितिकी पदचिह्न कम हो सकता है और एक अधिक स्थिर अर्थव्यवस्था का निर्माण हो सकता है।

1.3.3 कचरा कम करना और संसाधनों का संरक्षण:जैन धर्म यह भी महत्वपूर्ण मानता है कि कचरे को कम करना और संसाधनों का संरक्षण किया जाना चाहिए। जैन धर्म अनुयायी**अहिंसा**का पालन करते हुए डिस्पोजेबल उत्पादों का उपयोग कम करते हैं, पानी की खपत को कम करते हैं, और संसाधनों के पुनर्चक्रण और पुन: उपयोग को बढ़ावा देते हैं (Jain, 2016)।BRICS देशों में इस सिद्धांत को अपनाकर, एक**सर्कुलर अर्थव्यवस्था**की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकते हैं। इस मॉडल में कचरे को कम करने, उत्पादों को पुन: उपयोग करने, और सामग्रियों को पुनर्चक्रित करने की सिफारिश की जाती है, जो प्रदूषण को कम करने और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है। भारत और चीन जैसे देश, जो कचरा प्रबंधन और संसाधन शोषण के मुद्दों का सामना कर रहे हैं, ऐसे दृष्टिकोण को अपनाकर पर्यावरणीय क्षति को कम कर सकते हैं और एक अधिक स्थिर भविष्य की ओर बढ़ सकते हैं।

उदाहरण के लिए, देश नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश कर सकते हैं, सतत कृषि को बढ़ावा दे सकते हैं, और उद्योगों को हरे अभ्यास अपनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। इसके अलावा, कुशल पुनर्चक्रण और कचरा प्रबंधन प्रणालियों का विकास और इन प्रणालियों को लागू करना पर्यावरणीय दबाव को और कम कर सकता है और BRICS देशों को एक स्थिर भविष्य की दिशा में अग्रसर कर सकता है।

1.4 BRICS देशों के लिए प्रभाव:

जैन धर्म के सिद्धांतों को पर्यावरणीय नीतियों में शामिल करने से BRICS देशों को वैश्विक स्थिरता प्रयासों में एक मजबूत उदाहरण स्थापित करने का अवसर मिल सकता है। हालांकि, इस संक्रमण के लिए एक गहरी सांस्कृतिक बदलाव की आवश्यकता होगी–वह बदलाव जो उपभोक्तावाद और भौतिकवाद के प्रचलित मूल्यों को चुनौती दे। सरकारों, व्यवसायों, और व्यक्तियों को यह स्वीकार करना होगा कि दीर्घकालिक स्थिरता और पर्यावरणीय न्याय, तत्काल आर्थिक विकास से अधिक महत्वपूर्ण हैं।

एक अधिक स्थिर और पर्यावरणीय रूप से जागरूक समाज की ओर बढ़ना केवल जलवायु परिवर्तन को हल करने, जैव विविधता को संरक्षित करने, और प्रदूषण को कम करने में मदद नहीं करेगा, बल्कि यह सामाजिक समानता को भी बढ़ावा देगा। जैन धर्म के सिद्धांतों को लागू करने से ये देश एक अधिक सामंजस्यपूर्ण तरीके से पृथ्वी और एक-दूसरे के साथ संबंध बना सकते हैं।

जैन धर्म के सिद्धांतों–**अहिंसा**, **अपरीग्राह**, और संसाधन संरक्षण–ने पर्यावरणीय स्थिरता की दिशा में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया है। इन सिद्धांतों को अपनाकर, BRICS देश एक स्थिर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं, जिसमें आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण एक साथ चलते हैं। हालांकि यह मार्ग कठिन हो

सकता है, लेकिन इसके फल–पर्यावरणीय क्षति में कमी, जीवन की गुणवत्ता में सुधार, और एक अधिक न्यायपूर्ण और समान समाज–इसके प्रयास के लायक हैं। उचित नीति निर्माण और सामूहिक मानसिकता में बदलाव के साथ, BRICS देश एक अधिक स्थिर और संतुलित दुनिया की दिशा में मार्गदर्शन कर सकते हैं।

जैन धर्म एक प्राचीन भारतीय धर्म है, जो अहिंसा (अहिंसा), अनेकंतावाद (anekantavada), तपस्विता (aparigraha), सत्य (satya), चोरी न करना (asteya), और ब्रह्मचर्य (brahmacharya) जैसे मूल्यों का पालन करता है। ये सिद्धांत न केवल नैतिक जीवन के लिए मार्गदर्शक हैं, बल्कि पर्यावरणीय स्थिरता में भी महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। BRICS देशों (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, और दक्षिण अफ्रीका) ने वैश्विक आर्थिक ताकत के रूप में अपनी स्थिति मजबूत की है, लेकिन इन देशों को औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और संसाधनों के अत्यधिक उपयोग के कारण गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इस शोध लेख का उद्देश्य यह अन्वेषण करना है कि जैन धर्म के सिद्धांत BRICS देशों को पर्यावरणीय स्थिरता की दिशा में मार्गदर्शन कैसे कर सकते हैं। यह लेख यह तर्क करता है कि जैन धर्म के सिद्धांतों को लागू करने से BRICS देशों को उनके स्थिर विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने, उनके कार्बन फुटप्रिंट को कम करने और उनके प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करने में मदद मिल सकती है। साथ ही, यह लेख BRICS देशों में जैन धर्म के सिद्धांतों के सफल कार्यान्वयन के केस स्टडीज पर भी चर्चा करता है।

1.5 BRICS देशों में जैन धर्म के सिद्धांतों का कार्यान्वयन - केस स्टडीज

1.5.1 भारत: भारत ने अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन जैसे सौर ऊर्जा परियोजनाओं के माध्यम से नवीकरणीय ऊर्जा पर ध्यान केंद्रित किया है, जो जैन धर्म के अहिंसा सिद्धांत से मेल खाता है और कार्बन उत्सर्जन और पर्यावरणीय नुकसान को कम करता है

1.5.2 ब्राजील: ब्राजील ने अमेज़नवर्षावन में वनों की कटाई को कम करने के लिए प्रतिबद्धता दिखाई है, जो अहिंसा के सिद्धांत को राष्ट्रीय नीतियों में शामिल करने का एक उदाहरण है।

1.5.3 चीन: चीन का ग्रीन औद्योगिक प्रथाओं और इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए धक्का देना जैन सिद्धांत ऐकेनतवाद के अनुरूप है, जो विकास और पर्यावरणीय सुरक्षा के बीच संतुलन दर्शाता है।

1.5.4 दक्षिण अफ्रीका: दक्षिण अफ्रीका की कचरा प्रबंधन नीतियाँ और संसाधन उपयोग में स्थिरता को बढ़ावा देने वाली प्रथाएँ जैन सिद्धांत तपस्विता को उजागर करती हैं, जो संयम और कम पर्यावरणीय नुकसान को बढ़ावा देती हैं।

निष्कर्ष

जैन धर्म पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए एक शाश्वत मार्गदर्शन प्रदान करता है, जिसमें अहिंसा, सरलता, सत्य, और प्रकृति के प्रति सम्मान शामिल हैं। BRICS देशों के लिए, जो बढ़ती अर्थव्यवस्थाएँ हैं और

जिनके सामने गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियाँ हैं, जैन सिद्धांतों को उनके नीतियों और प्रथाओं में शामिल करने से लाभ हो सकता है। इन मूल्यों को अपनाकर, BRICS देशों को अपने पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने, स्थिरता बढ़ाने और एक अधिक समान और पारिस्थितिकीय रूप से संतुलित दुनिया की दिशा में मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है। इन सिद्धांतों के कार्यान्वयन से स्थिर विकास लक्ष्यों की प्राप्ति और भविष्य पीढ़ियों के लिए पृथ्वी की रक्षा में मदद मिल सकती है।

संदर्भ:

1 अग्रवाल, ए., &जयस्वाल, एम. पी. (2020). भारतीय खुदरा क्षेत्र में कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटीप्रैक्टिसेज के माध्यम से पर्यावरणीय स्थिरता: एक वास्तविक जांच। *क्लीनर प्रोडक्शन जर्नल, 275*, 124090।

2 अग्रवाल, पी., &कौर, एच. (2021). पर्यावरणीय स्थिरता और कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी: भारतीय कंपनियों का विश्लेषण। *क्लीनर प्रोडक्शन जर्नल, 280*, 124220।

3 एलेन मैकआर्थर फाउंडेशन. (2019). *सर्कुलर इकोनॉमी क्या है?*https://www.ellenmacarthurfoundation.org/circular-economy/concept

4 कुमार, वी., सिंह, जे. पी., &सिंह, आर. (2017). *कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी और पर्यावरणीय स्थिरता: भारतीय मामलों के माध्यम से सम्बंध की खोज। व्यवसाय रणनीति और पर्यावरण, 26(4)*, 494-507।

5 खाद्य और कृषि संगठन (FAO). (2013). *पशुधन के माध्यम से जलवायु परिवर्तन से निपटना - उत्सर्जन और शमन के अवसरों का वैश्विक मूल्यांकन*। संयुक्त राष्ट्र खाद्य और कृषि संगठन।

6 गोपाल, के. (2017). *जैन धर्म और पारिस्थितिकी: जीवन के ताने-बाने में अहिंसा*। राउटलेज।

7 गोस्वामी, एस., &बंद्योपाध्याय, ए. (2019). *भारत में पर्यावरणीय स्थिरता और कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी: सीमेंट उद्योग से प्रमाण। क्लीनर प्रोडक्शन जर्नल, 231*, 914-925।

8 जैन, ए. के. (2018). *अनेकांतवाद: आधुनिक मनुष्य के लिए एक दर्शन। मानव मूल्यों का जर्नल, 24(2)*, 101-110।

9 जैन, एस. (2016). *पारिस्थितिकी और जैन धर्म*। जैन स्टडी सेंटर ऑफ नॉर्थ कैरोलिना।https://herenow4u.net/?id=120567

10 डंडास, पी. (2002). *द जैनस*। राउटलेज।

11 नायर, जी., &सेन गुप्ता, एस. (2021). *भारतीय हॉस्पिटैलिटी उद्योग में कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी और पर्यावरणीय स्थिरता प्रैक्टिसेज। क्लीनर प्रोडक्शन जर्नल, 289*, 125720।

12 फॉल्ट्ज, आर. सी. (2013). *धर्म और पर्यावरण: धर्म, प्रकृति और पारिस्थितिकी में एक पाठक*। ब्लूम्सबरीपब्लिशिंग।

13 बंद्योपाध्याय, ए., &मुखोपाध्याय, पी. (2019). कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटीप्रैक्टिसेज के माध्यम से पर्यावरणीय स्थिरता: भारतीय खनन क्षेत्र से प्रमाण। *क्लीनर प्रोडक्शन जर्नल, 225*, 237-249।

14 महेश्वरी, एस., &चक्रवर्ती, एस. (2021). *कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी और पर्यावरणीय स्थिरता भारतीय विनिर्माण कंपनियों में। क्लीनर प्रोडक्शन जर्नल, 316*, 128158।

15 मिश्रा, एस., इत्यादि. (2017). *पर्यावरणीय प्रदूषण और इसके भारतीय समाज पर प्रभाव।* भारतीय पर्यावरण अध्ययन पत्रिका।

16 संयुक्त राष्ट्र विभाग, आर्थिक और सामाजिक मामलों (UN DESA). (2019). *विश्व जनसंख्या दृष्टिकोण 2019: मुख्य बातें*। संयुक्त राष्ट्र विभाग, आर्थिक और सामाजिक मामले।https://population.un.org/wpp/Publications/Files/WPP2019_Highlights.pdf

17 सिंघल, वी. (2015). *जैन धर्म और सतत विकास। सोशल साइंसेज में अनुसंधान अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका, 5(4)*, 20-34।

18 सिंह, आर. के., &सक्सेना, आर. (2019). *जलवायु परिवर्तन और सतत विकास ब्रिक्स देशों में*। आर. के. सिंह, आर. सक्सेना, &आर. पी. गुप्ता (संपादक), *जलवायु परिवर्तन और सतत विकास: एक विकासशील अर्थव्यवस्था में उभरते मुद्दे और संभावनाएं* (pp. 37-52)।स्प्रिंगर।

19 सिंह, जे. पी., कुमार, वी., &सिंह, आर. (2019). *कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी और पर्यावरणीय स्थिरता: भारतीय संदर्भ में सम्बंध की खोज। क्लीनर प्रोडक्शन जर्नल, 225*, 1053-1066।